Introduction

।। प्राक्कथन ।।

गोस्वामी हरिराय जी का जन्म संवत् १६४७ में हुआ था। उन्होंने एक सौ पच्चीस वर्ष की पूर्णायु प्राप्त की थी, इस प्रकार वह भक्ति एवं रीति-काल की संक्रमण-सीमा के साहित्यकार थे।

गोस्वामी हरिराय जी ने लगभग एक सौ छियासठ ग्रन्थ संस्कृत में लिखे थे, इसके अतिरिक्त उन्होंने शताधिक ग्रन्थों का व्रजभाषा में भी प्रणयन किया था। व्रजभाषा में उन्होंने गद्य-पद्य, दोनों विधाओं में विपुल साहित्य की सृष्टि की थी। उनके सहस्राधिक पद, कृष्ण-लीलाओं की विविध मनोहारिणी झाँकियाँ प्रस्तुत करते हैं। उनके लिखे हुए, पंजाबी, गुजराती, मारवाड़ी, राजस्थानी, तथा खड़ी-बोली में भी कुछ पद मिलते हैं।

'महाप्रभु' तथा 'प्रभुचरण' की उपाधि से विभूषित गोस्वामी हरिराय जी, पुष्टि-मार्ग की आचार्य-परम्परा में जन्मे एक यशस्वी पुरुष थे, जिन्होंने अपनी प्रांजल मेधा से, अपने विशिष्ट व्यक्तित्व से तथा गौरव-मंडित वाणी से हिन्दी-संसार को प्रभावित किया था। भारत वर्ष के विभिन्न स्थलों पर परिभ्रमण कर उन्होंने अपने उदात्त अभिव्यक्ति-सामर्थ्य से पुष्टि-सम्प्रदाय के सिद्धान्तों का प्रसारण किया और हिन्दी-साहित्य के भंडार को अनेक अनुपम कृतियों से सम्पन्न बनाया।

व्रजभाषा गद्य-साहित्य के सूत्रकार गोस्वामी हरिराय जी ने 'दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता' जैसे प्रसिद्ध ग्रन्थ की रचना कर व्रजभाषा-गद्य को साहित्य

की भाषा बनने का गौरव प्रदान किया। वार्ताओं के माध्यम से उन्होंने दुरूह सैद्धान्तिक प्रसंगों को भी लोक-वाणी के समानुकूल प्रेषित कर, उसे जन-जन की रागात्मक - वृत्ति से संश्लिष्ट कर दिया।

प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक को, गोस्वामी हरिराय जी के व्रजभाषा साहित्य पर कार्य करने की प्रेरणा, सर्व प्रथम व्रजभाषा के प्रसिद्ध कवि, श्री गोविन्द जी चतुर्वेदी से प्राप्त हुई। पूज्य चतुर्वेदी जी ने गोस्वामी हरिराय जी के विपुल ग्रन्थ-राशि का संकेत करते हुए, उनमें से कुछ ग्रन्थों के प्राप्ति-स्थलों का भी निर्देश किया, जिससे लेखक अधिक उत्साहित हुआ।

मथुरा में आचार्य जवाहरलाल चतुर्वेदी से अनुसंधाता ने भेंट की और अपने शोध-विषय की इनसे चर्चा की। इन्होंने अपनी संकलित सामग्री के आधार पर गोस्वामी हरिराय जी के ग्रन्थों की एक लम्बी सूची दिखलाई और कहा कि ये सभी ग्रन्थ कांकरौली के सरस्वती भण्डार में उपलब्ध हैं।

श्री प्रभुदयाल जी मीतल द्वारा संपादित 'गोस्वामी हरिराय जी का पद साहित्य' नामक ग्रन्थ, बजरंग पुस्तकालय, मथुरा से प्राप्त हुआ। श्री मीतल जी ने इस ग्रंथ की आधार-प्रतियों के संबंध में भी लेखक को पूर्ण निर्देश दिये। बृन्दावन के श्री रतनलाल जी गोस्वामी के यहाँ भी गोस्वामी हरिराय जी के कुछ ग्रन्थ प्राप्त हुए। बजरंग पुस्तकालय के संचालक श्री निरंजन देव शर्मा के द्वारा भी लेखक को गोस्वामी हरिराय जी के कुछ ग्रन्थ उपलब्ध हो सके!

गोस्वामी हरिराय जी का अधिकांश साहित्य अप्रकाशित है और वह कांकरौली में उपलब्ध है, यह सूचना पाकर, मैं कांकरौली गद्दी के आचार्य गोस्वामी १०८ श्री ब्रजभूषण लाल जी महाराज के पास बड़ौदा आया और अपने अभीष्ट-विषय की इनसे चर्चा की। इनसे भी मुझे यही विदित हुआ कि गो० हरिराय जी का अधिकांश साहित्य इनके कांकरौली स्थित ग्रन्थागार में सुरक्षित है। कांकरौली गद्दी के इन आचार्य महानुभाव

से प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक का सम्बन्ध पीढ़ी दर पीढ़ी से रहा है। आचार्य श्री ब्रजभूषण लाल जी महाराज अधिकतर बड़ौदा में ही निवास करते हैं। अत: इनसे निरंतर सम्बन्ध बनाये रखने के लिए लेखक को अपना कार्य-क्षेत्र बड़ौदा ही अधिक उपयुक्त प्रतीत हुआ। परिणाम-स्वरूप अपने मित्र नन्दलाल चतुर्वेदी की सहायता से मेरा विषय म० स० विश्वविद्यालय में डा० दयाशंकर शुक्ल के निर्देशन में पंजीकृत हो गया।

गोस्वामी हरिराय जी का साहित्य कांकरोली के अतिरिक्त नाथद्वारा, कोटा, वृन्दावन आदि स्थानों से भी प्राप्त हुआ है। अपनी शोध-यात्रा में गो० हरिराय जी की विपुल ग्रन्थ-राशि के दर्शन हुए। यह सोचकर आश्चर्य मिश्रित खेद हुआ कि गोस्वामी हरिराय जी का व्रज-भाषा-काव्य अभी तक हिन्दी जगत में चर्चित नहीं हो पाया।

गोस्वामी हरिराय जी के विषय में हिन्दी साहित्य के अनेक विद्वानों ने अपने विचार प्रस्तुत किए हैं। इनमें स्वर्गीय श्री द्वारकादास परिख, श्री प्रभुदयाल जी मीतल, श्री जवाहर लाल चतुर्वेदी, डा० श्यामकुमार वर्मा, डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी, मिश्रबन्धु, डा० दीनदयालु गुप्त, डा० मुंशीराम शर्मा, डा० व्रजेश्वर वर्मा, डा० हरिहर नाथ टंडन प्रभृति विद्वानों का नाम उल्लेखनीय है। श्री प्रभुदयाल जी मीतल तथा श्री द्वारकादास परिख ने गो० हरिराय जी के विषय में विशेष रुचि प्रदर्शित की है, किन्तु गोस्वामी हरिराय जी का बहुत-सा साहित्य अब तक अज्ञात बना रहा, जिसको समाविष्ट कर सर्वांगीण रूप से प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध में प्रथमबार प्रस्तुत किया जा रहा है।

अध्ययन की सुविधा के लिए प्रस्तुत प्रबन्ध को नौ अध्यायों में विभाजित किया गया है।

प्रथम अध्याय में गोस्वामी हरिराय जी के साहित्य की पृष्ठभूमि स्पष्ट की गई है। साहित्यकार का कृतित्व उसके युगीन वातावरण से पर्याप्त प्रभावित रहता

है, गोस्वामी हरिराय जी का साहित्य भी उनके युग से सम्बद्ध रहा है, एतदर्थ इस अध्याय में गोस्वामी हरिराय जी की समकालीन राजनीतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों को स्पष्ट किया गया है। परिस्थितियों का तारतम्य वल्लभ सम्प्रदाय के आचार्यों से निरंतर बनाये रखने का यत्न किया गया है। इस प्रकार का अध्ययन लेखक का निजी प्रयास है।

द्वितीय अध्याय में गोस्वामी हरिराय जी के जीवन-चरित्र पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है। इस विषय को स्पष्ट करने के लिए अनेक सहायक ग्रन्थों का भी आधार लिया गया है। व्यक्तित्व निरूपण में लेखक के निजी विचार भी देखे जा सकते हैं।

तृतीय अध्याय में गोस्वामी हरिराय जी के व्रजभाषा कृतित्व का विवरण दिया गया है। उनके द्वारा रचित ग्रन्थों का पृथक्-पृथक् परिचय देकर उनका परीक्षण भी किया गया है। गोस्वामी हरिराय जी के समग्र-कृतित्व पर विवरणात्मक अध्ययन इस ग्रन्थ के माध्यम से प्रथम बार ही प्रस्तुत हुआ है, जिससे ग्रन्थ की मौलिकता बढ़ी है।

चतुर्थ अध्याय में गोस्वामी हरिराय जी के कृतित्व का वर्ण्य-विषय स्पष्ट किया गया है। अध्ययन की सुगमता के लिए इस 'वर्ण्य विषय' नामक अध्याय को तीन खण्डों में विभक्त किया गया है। प्रथम खण्ड में गोस्वामी हरिराय जी की भक्ति परक पद्य रचनाओं का वृत्त स्पष्ट किया गया है। द्वितीय खण्ड में शृंगार-परक व प्रशस्ति-परक पद्य रचनाओं के वर्ण्य की विवेचना की गई है, तथा तृतीय खण्ड में गोस्वामी हरिराय जी के गद्य-ग्रन्थों का वर्ण्य-विषय प्रस्तुत किया गया है। गो० हरिराय जी के ग्रन्थों की वर्ण्य विषयक विवेचना लेखक की अपनी देन है।

पंचम् अध्याय में गोस्वामी हरिराय जी के काव्य की भाव सम्पदा का विश्लेषण किया गया है तथा अनेक उदाहरणों द्वारा उनके काव्य में विविध रसों की

स्थिति स्पष्ट की गई है । गोस्वामी हरिराय जी के काव्य में प्रमुखत: वात्सल्य, श्रृंगार एवं शान्त-रस का ही निर्वाह हुआ है । इस अध्याय में इन रसों का पृथक्-पृथक् अध्ययन किया गया है । भाव एवं रस की शास्त्रीय विवेचना छोड़कर शेष मूल्यांकन-पक्ष लेखक का अपना प्रयास है ।

षष्ठ अध्याय में गोस्वामी हरिराय जी के काव्य के कला-पक्ष की विवेचना की गई है । इसमें काव्यगत भाषा, शब्द-योजना, वर्ण-मैत्री, शब्द-शक्ति, अलंकार तथा छन्द का विस्तृत विवेचन किया गया है, इसमें उद्धरण तथा विवेचन लेखक की अपनी उपलब्धि है ।

सप्तम् अध्याय में गोस्वामी हरिराय जी के गद्य-साहित्य का भाषा एवं शैली की दृष्टि से मूल्यांकन किया गया है ।

अष्टम् अध्याय में गोस्वामी हरिराय जी के साहित्य से ध्वनित भक्ति एवं दर्शन सम्बन्धी मान्यताओं को स्पष्टकिया गया है । इस सम्बन्ध में पुष्टि-मार्गीय सिद्धान्तों के अवगाहन हेतु अन्य सहायक-ग्रन्थों को भी आधार बनाया गया है ।

अन्तिम् अध्याय में प्रबंध का 'उपसंहार' दिया गया है, इसमें गोस्वामी हरिराय जी के समग्र-साहित्य का सिंहावलोकन करते हुए मूल्यांकन किया गया है जो लेखक का अपना अध्ययन है ।

अन्त में इस शोध-प्रबंध की निर्माण-यात्रा में जिन महानुभावों की सहायता मुझे प्राप्त हुई है उनका मैं हृदय से आभारी हूं । म० स० विश्वविद्यालय के हिन्दी-विभाग के अध्यक्ष पूज्य डा० मदन गोपाल गुप्त का सतत् स्नेह मुझे कार्य-निष्ठा के प्रति सदैव प्रेरित करता रहा है । विद्वान अध्यक्ष ने अपना अमूल्य समय निकाल कर अपने गंभीर विचारों

से मुझे लाभान्वित किया है अतएव मैं इनका आभारी हूं। आचार्य जवाहर लाल जी चतुर्वेदी, श्री प्रभुदयाल जी मीतल, ज्यो० राधेश्याम जी द्विवेदी, श्री बालमुकन्द जी चतुर्वेदी, श्री सुमनेश जी, डा० शंकरलाल चतुर्वेदी, पं० श्यामसुन्दर जी, लाला भगवान् दास जी आदि विद्वानों का भी मैं आभारी हूं जिनके विचारों का मैंने पर्याप्त लाभ उठाया है।

कांकरौली-गद्दी के आचार्य गो० १०८ श्री ब्रजभूषण लाल जी महाराज तथा श्री ब्रजेश कुमार जी का मैं हृदय से कृतज्ञ हूं, जिन्होंने अपने ग्रन्थागार (कांकरौली) के ग्रन्थों के अध्ययन करने का मुझे अवसर प्रदान किया, जिसके अभाव में यह शोध-कार्य पूर्ण न हो पाता। इसी प्रसंग में नाथद्वारा के निजी पुस्तकालय के स्वामी, तिलकायत महाराज गोस्वामी श्री गोविन्दलाल जी के प्रति भी लेखक कृतज्ञ है, जिन्होंने अध्ययन सम्बन्धी अनेक सुविधायें लेखक को प्रदान की थीं। बम्बई (बड़ा मन्दिर) के पू० श्री श्यामूबाबा, सूरत के श्री मथुरेश जी व इन्द्रा बेटी जी, गोकुल के श्री सुरेश बाबा, कामवन के श्री गिरधर बाबा आदि महोदयों ने भी समय-समय पर लेखक को प्रोत्साहित किया है, इन सबका भी लेखक हृदय से आभार मानता है।

श्री वेणी बेटी जी महाराज ने लेखक की सभी प्रकार से आर्थिक सहायता की है और उन्हीं के आशीर्वाद स्वरूप ही यह प्रबन्ध गठित हो पाया है, एतदर्थ लेखक इनका कृतज्ञ है, साथ ही बम्बई के सेठ श्री वसंतलाल मसरूवाला तथा प०म० चन्दा बहिन तथा दिल्ली के श्री एम०एल० सोधानी के प्रति भी लेखक आभार प्रदर्शित करता है।

मेरे मित्र नन्दलाल चतुर्वेदी भी धन्यवाद के पात्र हैं, जिन्होंने विषय-रजिस्ट्रेशन में मेरी सहायता की थी तथा समय-समय पर मुझे सक्रिय रहने को उकसाया था।

श्रद्धेय डा० व्रजवल्लभ मिश्र का लेखक आभार प्रकट करता है, जिन्होंने अपने अत्यन्त व्यस्त-कार्यक्रमों से समय निकाल कर अपने बहुमूल्य विचारों से लेखक को लाभान्वित किया है।

श्री चन्द्रभान राठी, गली सेठ भीकचन्द, मथुरा, ने बड़ी ही निष्ठा और लगन से इस प्रबन्ध का टंकण-कार्य सम्पन्न किया है, अत: इस प्रसंग में उनका महत्व भी कम नहीं आँका जा सकता !

अन्त में अपने प्रबन्ध-निर्देशक श्रद्धेय डा० दयाशंकर शुक्ल का मैं किन शब्दों में आभार प्रदर्शित करूं, जिनके सतत्-स्नेह और उचित निर्देशन के फलस्वरूप ही यह प्रबंध पूर्ण हो पाया है, मैं अपने विद्वान निर्देशक का चिर-ऋणी हूं और हृदय से इनका आभार मानता हूं !

(विष्णु चतुर्वेदी)
,अप्रैल, १९७३

विषयानुक्रमणिका

प्रथम -अध्याय	पृष्ठ-भूमि, गोस्वामी हरिराय जी कालीन राजनीतिक, सामाजिक एवं धार्मिक स्थिति ।
द्वितीय -अध्याय	गो० हरिराय जी का जीवन चरित्र- जन्म, शिक्षा-दीक्षा, विवाह, पर्यटन, प्रमुख घटनाएँ, व्यक्तित्व, अवसान ।
तृतीय -अध्याय	कृति परिचय, गो० हरिराय जी की गद्य-कृतियों का विवरण, कवि की छाप । काव्य कृतियों का विवरण ।
चतुर्थ -अध्याय	वर्ण्य-विषय, १- काव्य- (क) भक्तिपरक (ख) श्रृंगारपरक एवं सम्प्रदायगत, २- गद्य ।
पंचम् -अध्याय	गो० हरिराय जी के काव्य का भाव-पक्ष, भाव एवं रस विवेचन ।
षष्ठ -अध्याय	गो० हरिराय जी के काव्य का कला-पक्ष, भाषा, अलंकार तथा छंद ।
सप्तम् -अध्याय	गो० हरिराय जी के गद्य का विवेचन, भाषा एवं शैली ।
अष्टम् -अध्याय	गो० हरिराय जी के साहित्य में भक्ति एवं दर्शन ।
नवम् -अध्याय	उप-संहार, सिंहावलोकन, मूल्यांकन ।